

डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो, दस आज्ञाएँ, सत्र 4: आज्ञा 3, नाम में क्या रखा है?

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो दस आज्ञाओं पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 4 है, आज्ञा 3, नाम में क्या है?

खैर, अब हम तीसरी आज्ञा के बारे में बात करने जा रहे हैं। प्रभु का नाम व्यर्थ नहीं लेना चाहिए।

रोमियो और जूलियट में अमर कवि ने पूछा, "नाम में क्या रखा है?" जूलियट ने रोमियो से उसका नाम त्यागने के लिए कहा क्योंकि हम जिस गुलाब को किसी और नाम से पुकारते हैं, उसकी खुशबू उतनी ही मीठी होगी। इसलिए, रोमियो और जूलियट को लगा कि समस्या सिर्फ उनके नाम में है, और अगर वे उन नामों से छुटकारा पा सकें, तो उनकी सारी समस्याएँ दूर हो सकती हैं, और वे एक साथ रह सकते हैं।

लेकिन नाटक के अंत तक, निश्चित रूप से, उन्हें पता चल गया है कि उनके नाम में बहुत कुछ छिपा है और यह कि उनके पास किसी को बुलाने के लिए सिर्फ एक हैंडल या सुविधाजनक चीज़ होने से कहीं ज़्यादा काम है। इसलिए प्राचीन लोग शेक्सपियर की तुलना में नामों को और भी ज़्यादा गंभीरता से लेते थे और निश्चित रूप से आज के लोगों की तुलना में भी ज़्यादा गंभीरता से लेते थे। कई बाइबिल कहानियों में, नाम की अवधारणा काफ़ी प्रमुखता से दिखाई देती है।

मेरा मतलब है, जब भी कोई व्यक्ति किसी अधिपति के साथ नए रिश्ते में प्रवेश करता है, तो उसे अक्सर एक नया नाम मिलता है। हम देखते हैं कि बेबीलोन के राजा द्वारा दानियेल और उसके दोस्तों को नए नाम दिए गए। हम देखते हैं कि कुछ राजाओं को सीरियाई और बेबीलोन साम्राज्यों में शामिल किए जाने पर नए नाम दिए गए।

हमारे पास अब्राहम नाम का एक व्यक्ति है, जिसके नाम का मतलब है बहुत बड़ा पिता, या हम कह सकते हैं कि बड़ा पिता, शायद, या ऐसा ही कुछ। लेकिन जब वह परमेश्वर के साथ वाचा के रिश्ते में प्रवेश करता है, तो उसका नाम बदलकर अब्राहम कर दिया जाता है, जिसका मूल रूप से वही अर्थ है। लेकिन यह तथ्य कि परमेश्वर उसे यह नया नाम दे सकता है, उनके बीच नए रिश्ते को दर्शाता है।

हमारे पास जैकब नाम का एक व्यक्ति है, याकोव, जिसका नाम कई अर्थ रखता है और यह कहानी से जुड़ा है कि कैसे वह अपने जुड़वां भाई की एड़ी के टखने को पकड़कर पैदा हुआ था। और याकोव में वह भावना है जो पकड़ने वाले की है, जो किसी ऐसी चीज़ को विशेष रूप से पकड़ता है जिसके वे हकदार नहीं हो सकते। और निश्चित रूप से, हम जैकब की कहानी में थोड़ा आगे जानते हैं कि वह अपने भाई को उसके जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित करता है, खुद को एक बार फिर उन चीज़ों के लिए वास्तव में लालची साबित करता है, जिन पर उसका अधिकार नहीं है।

लेकिन नामों के महत्व के बारे में सबसे दिलचस्प कहानियों में से एक डेविड और अबीगैल की कहानी में आती है। और इस मामले में, डेविड शाऊल से भाग रहा है, और वह नाबाल नाम के एक व्यक्ति के घर आता है, और नाबाल डेविड को किसी भी तरह की सांत्वना या सहायता देने से इनकार कर देता है, और डेविड उस व्यक्ति को मारने का फैसला करता है। और नाबाल की पत्नी अबीगैल बाहर जाती है और अपने पति के लिए विनती करती है और कहती है, मेरे प्रभु, कृपया मेरे पति नाबाल पर ज़्यादा ध्यान न दें।

उसका नाम नाबाल है। और जैसा आदमी का नाम होता है, वैसा ही वह भी है। क्योंकि नाबाल इब्रानी भाषा में मूर्ख के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द भी है।

इसलिए, वह कहती है कि उसके नाम का मतलब मूर्ख है। और वास्तव में, वह मूर्ख है। अपने पति के बारे में बात करने का यह सबसे सम्मानजनक तरीका नहीं है।

लेकिन, लेकिन, अरे, अंत में सब ठीक हो गया। नाबाल की मौत हो जाती है और अबीगैल की शादी राजा डेविड से हो जाती है। तो वैसे भी, यह धारणा कि नाम किसी व्यक्ति के स्वभाव से किसी तरह जुड़े होते हैं, प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया में बहुत गहराई से व्याप्त है।

और अगर किसी राजा या मूर्ख व्यक्ति के नाम उनके स्वभाव से गहराई से जुड़े हैं, तो बेशक, हम उम्मीद कर सकते हैं कि भगवान का नाम भी उनके स्वभाव से गहराई से जुड़ा होगा। नामों को लगभग एक व्यक्ति के विस्तार की तरह माना जाता था, और लोग अपने नामों के प्रति बहुत सुरक्षात्मक हो सकते हैं, खासकर कभी-कभी दिव्य प्राणियों के लिए। और हमारे पास यह अद्भुत कहानी है जहाँ याकूब रात भर भगवान के एक दूत के साथ कुश्ती लड़ रहा है, या भगवान का दूत उन लोगों के लिए है जो ऐसी चीजों के बारे में चुस्त-दुरुस्त रहना चाहते हैं।

लेकिन पूरी रात कुश्ती लड़ने के बाद, जब सुबह होने वाली थी, तो याकूब ने दिव्य प्राणी से पूछा, कृपया मुझे अपना नाम बताओ। और दिव्य प्राणी ने उसे डांटते हुए कहा, तुम मेरा नाम क्यों पूछ रहे हो? अपने नाम की रक्षा करते हुए, वह कुछ अच्छे कारणों से अपना नाम प्रकट नहीं करना चाहता था, जैसा कि हम यहाँ कुछ मिनटों में देखेंगे। लेकिन फिर स्वर्गदूत ने याकूब को आशीर्वाद दिया और आशीर्वाद में अपना नाम इस्तेमाल किया।

नाम से चरित्र का पता चलता है। नाम किसी व्यक्ति का एक तरह का विस्तार हो सकता है। जब आप किसी को अपना नाम देते हैं, तो एक तरह से आप खुद को उनके प्रति संवेदनशील बना लेते हैं।

और हम देखते हैं कि जब परमेश्वर और मूसा एक रिश्ते में आ रहे हैं, तो प्रभु के नाम के बारे में थोड़ी सी जटिलता है, जहाँ मूसा एक बिंदु पर परमेश्वर से कहता है, वह कहता है, ठीक है, क्या आप कृपया मुझे बता सकते हैं, जब मैं इस्राएलियों के पास जाता हूँ और कहता हूँ, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे आने और लोगों को छुड़ाने के लिए कहा है, तो मैं उन्हें आपका नाम क्या बताऊँ? और परमेश्वर उत्तर देता है और कहता है, मैं वही हूँ जो मैं हूँ। उन्हें सीधे शब्दों में कहो, मैंने तुम्हें भेजा है। ठीक है, आप जानते हैं, वहाँ वास्तव में कोई नाम नहीं है।

स्पष्ट रूप से, इसके महत्व के बारे में सभी प्रकार के सिद्धांत, जिनके बारे में मैं इस समय नहीं बताने जा रहा हूँ, हैं। लेकिन, लेकिन उस समय, परमेश्वर वाचा के नाम यहोवा को वास्तव में प्रकट करने के लिए तैयार नहीं था, जिसे वह थोड़ी देर बाद मूसा को प्रकट करेगा। जब आपने अपना नाम प्रकट किया, तो कुछ अर्थों में, आपने खुद को असुरक्षित बना दिया क्योंकि एक बार जब आप किसी को अपना नाम देते हैं, तो वे आपके नाम का दुरुपयोग कर सकते हैं।

और यही वास्तव में तीसरी आज्ञा के बारे में है। आप जानते हैं, जब आप इस आज्ञा के शब्दों को देखते हैं, तो हम यहाँ इसका थोड़ा सा विश्लेषण करने जा रहे हैं। हम इस आज्ञा के शब्दों को देखते हैं।

तुम अपने परमेश्वर यहोवा का नाम नहीं लेना। यहाँ शब्द बहुत ही सामान्य हिब्रू क्रिया नासा है। और नासा का अर्थ उठाना, ले जाना, उपयोग करना या नियोजित करना हो सकता है। इसका अर्थ आवश्यक रूप से दुर्व्यवहार या उस तरह की किसी भी चीज़ का अर्थ नहीं है।

यह सिर्फ़ इस बारे में बात कर रहा है कि नाम का इस्तेमाल कैसे किया जाता है। इसका मतलब सिर्फ़ उच्चारण करना भी हो सकता है। इसमें बोले गए शब्द का इस्तेमाल शामिल है, इस में, या, और बाइबल में कई अन्य जगहें हैं जहाँ नासा का इस्तेमाल बोले गए शब्दों के संदर्भ में किया गया है, लेकिन, लेकिन निश्चित रूप से इसका इस्तेमाल सिर्फ़ इस बात के अलावा और भी कई चीज़ों के लिए किया जाता है कि आपको भगवान का नाम नहीं लेना चाहिए।

स्पष्ट रूप से, हम यहाँ यहोवा के बारे में बात कर रहे हैं, प्रकट वाचा का नाम, जिसे परमेश्वर ने अंततः मूसा को दिया था। शायद मूल रूप से एलोहिम शब्द का उल्लेख नहीं किया गया था, भगवान, आप जानते हैं, हमारे दिन और युग में, लोग इस बात पर विचार करते हैं कि जब कोई व्यक्ति शपथ के रूप में या विस्मयादिबोधक के रूप में भगवान शब्द का उच्चारण करता है, तो हम उसे शपथ कहते हैं और लोग कहते हैं, प्रभु का नाम व्यर्थ मत लो। खैर, भगवान शायद मूल रूप से वह नहीं था जो उनके मन में था।

यह एक तरह का विस्तार है जो हमने दिया है, जो शायद एल या एडोनाई शीर्षक का उल्लेख नहीं करता है। निश्चित रूप से, सिद्धांत को इन शीर्षकों तक बढ़ाया जा सकता है, और यही हुआ है, वैसे, आज भी यहूदी धर्म में, वे ईश्वर या एडोनाई का उच्चारण भी नहीं करने की कोशिश करते हैं, जो कुछ हलकों में थोड़ा संवेदनशील हो गया है।

तो, लेकिन, यह दिलचस्प है कि अगर आप बहुत रूढ़िवादी, यहूदी लेखकों द्वारा लिखे गए साहित्य को पढ़ें, तो अक्सर वे नाम की वर्तनी में, यहाँ तक कि भगवान शब्द को भी G डैश D से लिखेंगे क्योंकि नाम लिखना भी अपमानजनक माना जाता है और शायद आज्ञा का उल्लंघन है, या यदि उल्लंघन नहीं है, तो आज्ञा का उल्लंघन करने के करीब पहुँचना और, और बहुत ही चौकस यहूदी इन कानूनों में से किसी को भी तोड़ने की संभावना के करीब भी नहीं जाना चाहते हैं। एक अंग्रेजी नाम के रूप में, इसका हिब्रू में प्रतिष्ठा भी हो सकता है। और यह एक महत्वपूर्ण बिंदु भी है, क्योंकि, जब हम, आप जानते हैं, आपके, आपके पिताजी आपसे कहेंगे, आप जानते हैं, बेटा, आप मेरा नाम धारण कर रहे हैं और आप जानते हैं, आपने नहीं किया है, तो आपको यह

सुनिश्चित करना होगा कि आप किसी भी चीज़ से ज़्यादा अपने अच्छे नाम की रक्षा करें, जिसका मतलब निश्चित रूप से आपकी प्रतिष्ठा है और यही बात प्राचीन इज़राइल में भी सच हो सकती है, कि भगवान का नाम भगवान की प्रतिष्ठा को संदर्भित कर सकता है।

आप जानते हैं, जब भजनों में प्रभु के नाम की स्तुति की जाएगी और इस तरह की बातें कही जाती हैं, तो मुझे नहीं लगता कि उनके मन में ऐसी कोई बात थी जो हम अक्सर आधुनिक स्तुति संगीत में देखते हैं, जहाँ, ओह, आपका नाम कितना सुंदर है। भगवान, मुझे यीशु नाम बहुत पसंद है। आप जानते हैं, मुझे नहीं लगता कि उनके मन में ऐसा कुछ था।

इसका संबंध वास्तव में भगवान की प्रतिष्ठा से है, जहाँ भगवान के कार्य, भगवान ने अपने स्वभाव में जो कुछ किया है। नाम इन सभी को संदर्भित कर सकता है। इसलिए, निश्चित रूप से यह सोचने से कहीं अधिक कुछ चल रहा है कि नाम बहुत अच्छा है या ऐसा कुछ।

फिर यहाँ तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु, व्यर्थ में शब्द, तुम अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ में नहीं लेना चाहिए, आधुनिक अनुवादों ने इसके साथ सभी प्रकार की चीज़ें करने की कोशिश की है। उन्होंने कुछ ऐसा कहने की कोशिश की है, तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। मुझे लगता है कि यह शायद इन दिनों सबसे आम अनुवादों में से एक है।

पुराने किंग जेम्स संस्करण में व्यर्थ कहा गया था, और यह वास्तव में हिब्रू का सबसे सटीक अनुवाद है। में, में, व्यर्थ में अनुवादित शब्द आधुनिक उच्चारण में शवा है, लेकिन, शवा एक ऐसा शब्द है जिसमें शून्यता या तुच्छता का भाव है, और यह एक दिलचस्प बात है कि, हमारे, उन लोगों में जो अंग्रेजी उच्चारण विधियों से परिचित हैं, वे जानते हैं कि, जब हमारे पास एक हल्का स्वर होता है जिसे आप तुच्छ समझ कर छोड़ देते हैं, तो इसे अंग्रेजी में शवा कहा जाता है। खैर, यह इस शब्द से आता है, इस हिब्रू शब्द से।

और इसलिए, इसका अर्थ है कि कुछ ऐसा जिसका उपयोग किया जाता है और माना जाता है कि उसका कोई महत्व नहीं है या जिसे तुच्छ, अर्थहीन माना जाता है, या जो झूठ को संदर्भित कर सकता है। श्वा के शब्द, व्यर्थ के शब्द, झूठ को संदर्भित करते हैं, ठीक है? जैसा कि हमने पहले कहा है, दस आज्ञाएँ सारांश कथन हैं, और उनके अर्थ कानून में अन्य स्थानों पर और बाइबल में अन्य स्थानों पर भरे हुए हैं। इसलिए हमारे पास यह कथन है: तुम अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना।

एक बहुत ही अस्पष्ट कथन लगता है। और अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ में लेने का क्या मतलब है? खैर, हमें अनुमान लगाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि टोरा में थोड़े बाद में कई ऐसे अंश हैं जो हमें बताते हैं कि वे यहाँ किस बारे में बात कर रहे हैं। और हमें यह स्पष्ट समझ मिलती है कि उनके मन में क्या था।

ईश्वर के नाम का दुरुपयोग करने के सबसे प्रमुख तरीकों में से एक ईशनिंदा था। ईशनिंदा, हिब्रू और ग्रीक दोनों शब्दों में ईशनिंदा का अर्थ मूल रूप से किसी की निंदा करना है। प्रभु की निंदा करना जानबूझकर ईश्वर का अपमान करना है, खासकर ईश्वरीय नाम का उपयोग करके।

यह एक दिलचस्प विचार है। अब, फिर से, नाम या तो प्रतिष्ठा हो सकता है या यह वास्तव में नाम का शाब्दिक अर्थ हो सकता है। इसलिए, प्रभु की निंदा करने का मतलब प्रभु के बारे में बुरी बातें बोलना हो सकता है, या इसका मतलब विशेष रूप से अपमानजनक तरीके से ईश्वरीय नाम का उपयोग करना हो सकता है।

तो प्रभु के नाम के खिलाफ ईशनिंदा। लैव्यव्यवस्था 24:10 में, हमारे पास यहाँ एक तरह का डरावना अंश है। इस्राएली, एक इस्राएली महिला का बेटा और एक इस्राएली पुरुष, शिविर में लड़े, और इस्राएली महिला के बेटे ने नाम की निंदा की और शाप दिया।

यह एक ऐसे व्यक्ति का जिक्र है जिसका पिता मिस्री था। उसकी माँ इसराइली है। वह मिस्री पृष्ठभूमि से है, इसलिए वह ज़्यादा कुछ नहीं जानता, लेकिन फिर भी।

इसलिए, वह प्रभु के नाम का उपयोग करता है और जाहिर तौर पर इसका उपयोग किसी तरह के शाप देने वाले तरीके से करता है, उसका मज़ाक उड़ाता है या इस तरह का कुछ करता है। वे उस आदमी को मूसा के पास ले गए, और प्रभु ने मूसा से कहा, इस्राएल के लोगों से कहो, जो कोई अपने परमेश्वर को शाप देगा, उसे अपने पाप का बोझ उठाना पड़ेगा। जो कोई प्रभु के नाम की निंदा करेगा, उसे अवश्य ही मृत्युदंड दिया जाएगा।

और पूरा समुदाय इकट्ठा हो जाता है और उस आदमी को पत्थरों से मार डालता है। तो, इस मामले में, यह स्पष्ट रूप से कहता है कि उसने भगवान के नाम की निंदा की, और मिशन के अनुसार, इस मामले में इसका शाब्दिक अर्थ नाम है। अब, मिशन, मैंने टर्मिनल गुफा शब्द की व्याख्या की, जो यहाँ ईशनिंदा शब्द है। उसने नाम की निंदा की।

यही है। मिशना में उस शब्द, नो केव, का अर्थ केवल पूर्ण रूप से किया गया है। और मिशन के अनुसार, अब इस आदमी का सबसे बड़ा पाप यह था कि उसने वास्तव में भगवान का नाम लिया था।

और मिशन, मैंने वास्तव में कहा कि किसी को भी ईशनिंदा का दोषी नहीं ठहराया जा सकता जब तक कि उन्होंने वास्तव में ईश्वरीय नाम, यहोवा का नाम इस्तेमाल और उच्चारण न किया हो। तो, यह मिशन सैनहेड्रिन सात, पांच है। तो, ऐसा निश्चित रूप से यीशु के मुकदमे में नहीं लगता है, जहाँ यीशु पर ईशनिंदा का आरोप लगाया गया था।

खैर, हम इस बारे में थोड़ी देर बाद बात कर सकते हैं, लेकिन, यह, यह, लेकिन यह धारणा, मिशन के लेखन के समय रब्बियों द्वारा आगे बढ़ाने की कोशिश की जा रही थी, आप जानते हैं, तीसरी शताब्दी ई.पू. के आसपास कि आपको ईशनिंदा का दोषी होने के लिए भगवान का नाम लेना होगा। अब, ईश्वर की प्रतिष्ठा के खिलाफ ईशनिंदा के बारे में क्या ख्याल है, बजाय इसके कि केवल ईश्वरीय नाम का उपयोग किया जाए? भजन 139 में ईश्वर की निंदा करना नाम को व्यर्थ में लेने के बराबर है। यह यहाँ एक दिलचस्प छोटी सी आयत है।

ओह, ओह, काश तुम दुष्टों का वध कर देते। हे परमेश्वर। वैसे, यह एक तरह का भयानक भजन है।

लेकिन वे, काश, आप दुष्टों को मार डालते। हे परमेश्वर, हे, खून के लोग मुझसे दूर हो जाओ। वे दुर्भावनापूर्ण इरादे से आपके खिलाफ बोलते हैं।

आपके दुश्मन आपका नाम व्यर्थ में लेते हैं। तो, यह एक तरह की काव्यात्मक समानता है जहाँ अनिवार्य रूप से हम एक ही तरह की बात कर रहे हैं, एक ही तरह की बात दो बार कह रहे हैं। तो पहली बार जब हम कुछ कह रहे हैं, तो आप जानते हैं, वे आपके खिलाफ़ बुरी बातें बोल रहे हैं।

वे आपके बारे में बुरी बातें कह रहे हैं, भगवान। और फिर इसे आपके दुश्मनों द्वारा आपका नाम व्यर्थ लेने के बराबर माना जाता है। तो, यह स्पष्ट रूप से ईश्वर की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के रूप में ईशनिंदा के बारे में बात कर रहा है।

यीशु, फिर से, नए नियम में ईशनिंदा के लिए दोषी ठहराया गया। क्यों? क्योंकि उसने कहा कि वह ईश्वर के बराबर है। और कई बार उन्हें, उन्हें, हमें, हमें बताया गया कि वे उसे मौत की सज़ा देना चाहते थे।

एक बार, स्पष्ट रूप से, हमें बताया गया है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने खुद को भगवान के बराबर कर लिया था। जॉन के अनुसार, और उसके परीक्षण के दौरान, यीशु को मृत्युदंड के योग्य ठहराया गया क्योंकि उसने खुद को मनुष्य के पुत्र के बराबर माना, दानियेल की पुस्तक से, जिसे उस समय, यहूदी मंडलियों में से कई लोगों ने एक ऐसे व्यक्ति के रूप में व्याख्या किया जो अनिवार्य रूप से भगवान के बराबर था। इसलिए उस अंश में यीशु द्वारा खुद को मनुष्य के पुत्र के रूप में पहचाने जाने से, यीशु खुद को भगवान के बराबर बना रहा है।

और इसे ईशनिंदा माना जाता था क्योंकि यह परमेश्वर के अच्छे चरित्र, परमेश्वर की प्रतिष्ठा को कलंकित करता है। अब, यीशु ने यह चेतावनी दी थी कि जो लोग दावा करते हैं कि पवित्र आत्मा का कार्य शैतान द्वारा किया गया था, वे परमेश्वर और पवित्र आत्मा के विरुद्ध ईशनिंदा के दोषी थे। हाँ।

और यह उन पापों में से एक है, जिसके बारे में लोग, एक पादरी के रूप में, मुझसे बात करते हैं और कहते हैं, आप जानते हैं, मुझे डर है कि मैंने पवित्र आत्मा की निंदा की है। और वे कहते हैं, अच्छा, तुमने क्या किया? और उन्होंने कहा, अच्छा, मैंने किसी ऐसे व्यक्ति का मज़ाक उड़ाया जो अन्य भाषाओं में बोल रहा था। मुझे नहीं लगता कि यीशु के मन में यही था, आप जानते हैं? यीशु कहते हैं, आप जानते हैं, कि यह इस दुनिया में या अगले में माफ़ नहीं किया जाएगा।

बहुत से लोगों को इस बात की बहुत चिंता है। और यह एक तरह का, यह उन कथनों में से एक है, जिसके बारे में मेरा एक हिस्सा चाहता है कि यीशु ने ऐसा कभी न कहा होता, लेकिन मेरा दूसरा हिस्सा समझता है कि क्यों और क्या हो रहा था। और संदर्भ में, यीशु जो कह रहे हैं वह यह है कि वे लोग जो इतने कठोर हृदय वाले हैं कि वे परमेश्वर के कार्य को स्वीकार नहीं करेंगे और परमेश्वर की आत्मा की गति के विरुद्ध अपने हृदय को कठोर बना लेंगे, वे अनिवार्य रूप से इस तरह की ईशनिंदा के दोषी हैं।

और मुझे यकीन नहीं है कि यह इतना अधिक कार्य है, जो अक्षम्य है, या यह रवैया है, क्योंकि रवैया दिल की कठोरता को दर्शाता है। लेकिन मैं बस यहीं तक सीमित रहूंगा। और यह एक तरह से अलग बात है, मुझे लगता है।

कोई पूछ सकता है, आप जानते हैं, आप जानते हैं, लाठी और पत्थर मेरी हड्डियाँ तोड़ सकते हैं, लेकिन शब्द मुझे कभी चोट नहीं पहुँचाएँगे। भगवान को लोगों द्वारा उनके बारे में बुरी बातें कहने पर इतना गुस्सा क्यों आता है? हाँ। क्या भगवान के पास एक नाजुक अहंकार है कि वह डरता है कि लोग उसका मज़ाक उड़ाएँगे या कुछ और? खैर, भगवान के खिलाफ़ बोलना और भगवान और भगवान की प्रकृति के बारे में बुरी बातें कहना सिर्फ़ किसी व्यक्ति या चीज़ का मज़ाक उड़ाने का मामला नहीं है, बल्कि इस्राएलियों के बीच भगवान के बारे में बुरी बातें कहना है।

यह एक तरह का देशद्रोह है क्योंकि यह राष्ट्र के ईश्वर में विश्वास को कमज़ोर कर रहा है। और इसलिए, जैसे युद्ध के समय में, अगर कोई राष्ट्रपति और उनकी नीतियों आदि के बारे में बहुत सारी बुरी बातें बोल रहा है, तो उन लोगों को दुश्मन को सहायता और आराम देने या कुछ मामलों में देशद्रोह करने का दोषी ठहराया जा सकता है। इसी तरह, इज़राइल के मामले में, अगर लोग ईश्वर और अपने लोगों को बचाने और उन्हें बनाए रखने की प्रभु की क्षमता में विश्वास को कमज़ोर कर रहे थे, तो यह पूरे समुदाय के लिए हानिकारक हो सकता है और पूरे समुदाय को तोड़ सकता है।

इसलिए बाइबल हमें इतनी गंभीरता से क्यों लेती है, इसका कारण परमेश्वर का अहंकार नहीं है। इसका कारण परमेश्वर के लोगों की सुरक्षा है, परमेश्वर के लोगों की सुरक्षा है, और यह सुनिश्चित करना है कि वे प्रभु पर और परमेश्वर द्वारा बताए गए कामों को करने की उनकी क्षमता पर भरोसा बनाए रखें। ठीक है।

तो यह भगवान के नाम का व्यर्थ में उपयोग करने का एक तरीका है। भगवान के नाम का व्यर्थ में उपयोग करने का एक और तरीका है प्रतिज्ञाओं को तोड़ना। पुराने नियम के समय में, जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा करना चाहते थे, तो उन्हें अक्सर प्रोत्साहित किया जाता था कि वे ऐसा भगवान के नाम पर करेंगे।

तो व्यवस्थाविवरण 6, 13, यह यहोवा है, तुम्हारा परमेश्वर, तुम उसका भय मानो। तुम उसकी सेवा करोगे, और उसके नाम की शपथ लोगे। तो रोमियो और जूलियट की बात कहने के बजाय, तुम जानते हो, रोमियो चाँद की कसम खाना चाहता है कि वह हमेशा जूलियट से प्यार करेगा।

और वह कहती है, ओह, चाँद की कसम मत खाओ, अस्थिर चाँद की, तुम्हें पता है? अब, बेशक, पुराने नियम के समय में, अगर वे चाँद की कसम खा रहे थे, तो वे शायद चाँद भगवान की कसम खा रहे थे, और कह रहे थे, तुम जानते हो, मई की कसम, अनिवार्य रूप से कुछ इस तरह कि चाँद भगवान मुझे मार डालें या कुछ और। अगर मैं वह करने में विफल रहता हूँ जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ, तो मैं करने जा रहा हूँ। और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक कहती है, चाँद की कसम मत खाओ।

सूर्य की कसम मत खाओ। इनमें से किसी भी प्राकृतिक घटना या किसी अन्य आत्मा की कसम मत खाओ; केवल भगवान की कसम खाओ। इसलिए यह भगवान के नाम पर है, मैं यह करूँगा, जो मैंने तुमसे कहा है कि मैं करूँगा।

ठीक है। लेकिन अगर आप ऐसी शपथ लेते हैं और उसे निभाने का आपका कोई इरादा नहीं है, तो यह बहुत बुरी बात है। अरे, लैव्यव्यवस्था 19:12, तुम मेरे नाम की झूठी शपथ न खाओ।

और इसलिए, अपने परमेश्वर यहोवा के नाम को अपवित्र करो, मैं यहोवा हूँ। यह स्पष्ट रूप से फिर से प्रभु के नाम को व्यर्थ लेने के साथ पहचाना जाता है। यह एक ऐसा मामला है जहाँ आप कुछ ऐसा कहते हैं, आप जानते हैं, मैं आपसे वादा करता हूँ, मैं आपको इन सभी सामानों के लिए मंगलवार को भुगतान करूँगा, जो आपने आज मुझे प्रभु के नाम पर दिए हैं, यह किया जाएगा।

पैसे होंगे और आप बस किसी को बहकाने के लिए ऐसा कर रहे हैं ताकि लगे कि आप ईमानदार हैं। यह स्पष्ट रूप से भगवान का नाम व्यर्थ लेने का मामला है।

और यह कुछ ऐसा था जिसे प्रभु ने बहुत गंभीरता से लिया। जकर्याह 5:3. तब उसने मुझसे कहा, यह वह अभिशाप है जो पूरे देश पर आता है, क्योंकि जो कोई चोरी करता है, वह एक तरफ की बात के अनुसार शुद्ध किया जाएगा। जो कोई झूठी शपथ खाता है, वह दूसरी तरफ की बात के अनुसार शुद्ध किया जाएगा।

क्या आपने कभी जकर्याह की पुस्तक का अनुवाद करने की कोशिश की है? यह एक गड़बड़ है। वैसे भी, मैं इसे भेजूंगा, सेनाओं के यहोवा की घोषणा है, और यह चोर के घर में और मेरे नाम की झूठी शपथ खाने वाले के घर में प्रवेश करेगा, और यह उसके घर में रहेगा और उसे, लकड़ी और पत्थरों को भस्म कर देगा। इसलिए यहाँ जकर्याह की पुस्तक में, परमेश्वर उन लोगों के बारे में बात कर रहा है जिन्हें वह देश से बाहर निकालने जा रहा है।

और इसमें वे लोग भी शामिल हैं जो भगवान के नाम की कसम खाते हैं, फिर भी उनका अपनी कसमों को निभाने का कोई इरादा नहीं होता। झूठी कसम खाना भगवान के प्रति सम्मान की कमी को दर्शाता है। मूल रूप से, आप जो सोच रहे हैं वह यह है कि मैं जो चाहता हूँ उसे पाने के लिए भगवान का उपयोग कर सकता हूँ, और मुझे इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि भगवान इसके बारे में कुछ भी करेंगे।

प्रभु के प्रति पूर्ण सम्मान की कमी, पूर्ण भय की कमी। और यीशु, वह नए नियम में सीधे इस बात को संबोधित करते हैं। और जब 10 आज्ञाओं और पहाड़ी उपदेश के बारे में बात करते हैं, तो यह तीसरी आज्ञा का पहलू है जिस पर वह ध्यान केंद्रित करते हैं।

फिर, तुमने सुना है कि पुराने लोगों ने कहा था, तुम झूठी शपथ न खाओ, बल्कि जो शपथ खाओ, उसे प्रभु के सामने पूरा करो। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, कोई शपथ मत खाओ, न तो स्वर्ग की, क्योंकि यह परमेश्वर का सिंहासन है, न ही पृथ्वी की, क्योंकि यह उसका पाँवदान है, या यरूशलेम की, क्योंकि यह महान राजा का शहर है। अपने सिर की शपथ मत खाओ क्योंकि तुम एक बाल भी सफेद या काला नहीं कर सकते।

जब आप सिर्फ़ हाँ या ना कहते हैं, तो इससे ज़्यादा कुछ भी बुराई से आता है। इसलिए इस बारे में यीशु के निर्देश हैं, हाँ, आपने यह सुना है, अपनी शपथों को मत तोड़ो। यह मत कहो कि तुम प्रभु के नाम पर कुछ करने जा रहे हो और फिर उसे न करो।

यीशु कहते हैं, ठीक है, सच में, अगर आप ईमानदार व्यक्ति हैं, तो आपको शपथ लेने की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है। आप जानते हैं, आपकी हाँ ही काफी होनी चाहिए। आपकी ना भी काफी होनी चाहिए।

और इसलिए ये शपथ लेने की कोशिश मत करो। और वह एक सिद्धांत का उपयोग करता है जिसे हम मेटोनीमी कहते हैं, जहाँ दो चीज़ें जो प्रकृति से जुड़ी होती हैं, एक तरह से बयानबाजी के अर्थ में जुड़ जाती हैं, आप जानते हैं, जहाँ वह स्वर्ग के बारे में बात कर रहा है, वह कहता है, स्वर्ग की कसम मत खाओ। यहूदी इतिहास में इस बिंदु पर, वे पहले से ही भगवान के लिए एक विशेषण के बजाय, भगवान कहने के बजाय, एक तरह के रूपक के रूप में स्वर्ग शब्द को शामिल कर रहे थे।

इसलिए यह कहने के बजाय कि, आप जानते हैं, प्रभु आपकी ज़रूरतों को पूरा करेगा, वे कहेंगे कि स्वर्ग आपकी ज़रूरतों को पूरा करेगा। हम आज भी ऐसा करते हैं, है न? आप जानते हैं, लेकिन यह उनके लिए नहीं था। यह प्रभु का नाम लेने से बचने का एक तरीका था।

ठीक है। तो, यीशु कहते हैं, स्वर्ग की कसम मत खाओ क्योंकि मूलतः यह भी वही बात है, प्रभु की कसम खाना। लेकिन यीशु कहते हैं, बस ईमानदार लोग बनो।

अगर आपको इसकी ज़रूरत नहीं है तो खुद को ईमानदार साबित करने की कोशिश न करें। इसलिए बेहतर है कि आप बिल्कुल भी कसम न खाएं। और यह जेम्स की भी बात है, जेम्स यहाँ यीशु की बात दोहरा रहा है।

पर सब से बड़ी बात यह है कि हे मेरे भाईयों, न तो स्वर्ग की, न पृथ्वी की, न किसी और चीज़ की शपथ खाओ। पर तुम्हारी बात हाँ की हाँ हो, और न की न की न, कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरो।

इसलिए जेम्स ने अपने प्रभु के शब्दों को दोहराया, जैसा कि वह अक्सर बहुत ही व्यावहारिक शब्दों में करते हैं, कि शपथ लेना अनिवार्य रूप से एक तरह का खतरनाक क्षेत्र है जिस पर चलना चाहिए। भगवान के नाम का दुरुपयोग करने का एक और तरीका, और यह एक ऐसा तरीका है जिसके बारे में हम शायद बहुत ज़्यादा न सोचें क्योंकि ऐसा नहीं लगता है क्योंकि ऐसा लगता है कि हमारे समाज में इसका उतना तत्काल अनुप्रयोग नहीं है। लेकिन जादू में भगवान के नाम का उपयोग और जादू के मंत्रों में भगवान के नाम का उपयोग करना निषिद्ध था।

और फिर भी हम पाते हैं कि ऐसा अक्सर किया जाता था। पुराने नियम के समय में इसके लिए हमारे पास बहुत ज़्यादा सबूत नहीं हैं। हम जानते हैं कि ऐसा हुआ था।

नए नियम के समय में इसके लिए हमारे पास बहुत सारे सबूत हैं। चूँकि नाम किसी व्यक्ति का विस्तार होता है, इसलिए जादूगर अक्सर मंत्रों में आत्माओं के नामों का इस्तेमाल करते थे। और हमारे पास, फिर से, बेबीलोन से बहुत सारे मंत्र हैं, मिस्र से बहुत सारे मंत्र हैं।

और उन मंत्रों का एक प्रमुख पहलू यह है कि वे देवताओं और आत्माओं के नामों का उपयोग उन्हें नियंत्रित करने के तरीके के रूप में करते हैं। और यह जिस तरह से अक्सर इस्तेमाल किया जाता है वह दिलचस्प है। ऐसा इसलिए है क्योंकि नाम अक्सर एक साथ चलते हैं या वे एक तरह से मिश्रित होते हैं।

और यह बहुत सारी रोचक घटनाओं से जुड़ा हुआ है। अब्राकाडाबरा। अब्राकाडाबरा एक मुहावरा है, जिसे हम जादूगरों और आम तौर पर जादू के शो से जोड़ते हैं, लेकिन मूल रूप से इसका इस्तेमाल जादू में बहुत गंभीरता से किया जाता था।

यह सिद्धांत बनाया गया है, और मुझे लगता है कि यह शायद एक बहुत अच्छा सिद्धांत है, कि अब्राकाडाबरा वास्तव में पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर अरामी वाक्यांश का एक भ्रष्ट रूप है। तो और हाँ, अब, उनके पिता, आत्मा अरचम है, और हमारे पास और बेटा, ज़ाहिर है, बार है। तो, अब्राकाडाबरा, यह बहुत हद तक वैसा ही है जैसे वे अक्सर जादू के मंत्रों में नामों का उपयोग करते थे, क्योंकि वे उन्हें मिलाते थे और फिर छोटी-छोटी तुकबंदियाँ और इस तरह की चीज़ें बनाते थे।

हम इसे अक्सर देखते हैं। और यह भगवान के नाम का अपमानजनक तरीके से उपयोग करने का एक और तरीका होगा। और हम इसे निंदा ग्रंथों, निंदा ग्रंथों में पाते हैं।

हमारे पास इस तरह की बहुत सी चीज़ें हैं, अरामी अभिशाप के कटोरे। हमारे पास ग्रंथ भी हैं, लेकिन कटोरे मज़ेदार थे, क्योंकि वे जो करते थे वह यह था कि वे अपने दुश्मनों के नाम और इन कटोरों को लिखते थे, और फिर वे किसी ऐसे भगवान का नाम इस्तेमाल करते थे जिसका आह्वान वे उन पर श्राप लाने के लिए करते थे। और फिर वे कटोरे लेते थे और वे कटोरे को एक तरह के सहानुभूतिपूर्ण जादू के रूप में तोड़ देते थे, यह दिखाने का एक तरीका था कि वे अपने दुश्मनों के साथ क्या करना चाहते हैं।

और शाप का मतलब मूल रूप से शाप देना होता है। तो फिर, जैसा कि मैंने कहा, इन चीज़ों में अक्सर देवताओं के नाम का आह्वान किया जाता था। शक्तिशाली आत्माओं के नाम अक्सर कम शक्तिशाली आत्माओं को आदेश देने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

और अगर आप में से कोई तलवार और जादू जैसी काल्पनिक कहानियों का प्रशंसक है, तो हम देखते हैं कि बहुत से ऐसे उपन्यास हैं जिनमें कोई जादूगर किसी महान आत्मा के नाम का इस्तेमाल किसी राक्षस को अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मजबूर करने के लिए करता है। और यह एक तरह की चीज़ है जो फिर से, बहुत पुराने समय से चली आ रही है। एक तरह से, यह प्रार्थना की एक तरह की विकृत पैरोडी है।

और, आप जानते हैं, यीशु ने हमें चेतावनी दी थी कि जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हमें बुतपरस्तों की तरह अर्थहीन दोहराव का उपयोग नहीं करना चाहिए। आप जानते हैं, हमें इस तरह के गाने-बजाने वाले काम नहीं करने चाहिए जो वास्तव में आध्यात्मिक चीज़ों के बजाय जादू की तरह ज़्यादा हैं। तो जादू, एक तरह से देवताओं का आह्वान करता है, देवताओं का इस तरह से उपयोग करता है जो अपमानजनक है क्योंकि यह देवताओं की शक्ति का सम्मान नहीं करता है।

यह ईश्वर की प्रतिष्ठा का सम्मान नहीं करता। बल्कि, यह ईश्वरीय सत्ता के नाम पर निहित शक्ति को अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश करता है। तो, लगभग निश्चित रूप से यही इस आज्ञा का हिस्सा था, भले ही इसमें पुराने नियम से उतनी स्पष्टता न हो।

बाद के समय से, अंतर-नियम काल से, और यहूदी जादुई ग्रंथों से, जिनमें से हमारे पास काफी कुछ है, यह बहुत स्पष्ट है। जब मैंने पहली बार यह सीखा तो मुझे कुछ रोचक तथ्य पता चले। आम युग के रोमन जादू में, जैसा कि हम इसे कहते हैं, उन्होंने कई देवताओं के नामों का आह्वान किया।

लेकिन रोमन जादू की किताबों में सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला और सबसे ज़्यादा बार दिखने वाला नाम याहवेह है। रोमनों ने स्पष्ट रूप से सोचा कि प्रभु का गुप्त नाम, जिसकी रक्षा करने के लिए यहूदी इतने सावधान थे, उसमें कोई वास्तविक महाशक्ति होनी चाहिए। और इसलिए उन्होंने अपने जादू की किताबों में अक्सर इसका उल्लेख किया।

जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह उल्लेखनीय और विडंबनापूर्ण लगता है। इन तीनों प्रथाओं के आधुनिक समकक्ष हमारे अपने दिनों में भी जारी हैं। यह आज्ञा, भले ही आप जानते हों, यह सुनने में कुछ इस तरह की लगती है, आप जानते हैं, आपको अपने भगवान का नाम व्यर्थ नहीं लेना चाहिए, यह कुछ हद तक पुराने ज़माने की बात लगती है।

इस तरह की बातें हमारे समय में भी बहुत ज़्यादा होती रहती हैं। और यहाँ जिन दृष्टिकोणों का उल्लेख किया गया है, वे हमारे समय में भी जारी हैं। हम यहाँ सिर्फ़ अभद्र भाषा की बात नहीं कर रहे हैं।

ईशनिंदा। हमने इस बारे में बात की है कि ईशनिंदा का मतलब ईश्वर की प्रतिष्ठा को धूमिल करना और साथ ही ईश्वर के नाम को बदनाम करना भी हो सकता है। आप जानते हैं, यह एक तरह से चरण से बाहर हो गया, एक समय था जब देववादी और यहां तक कि नास्तिक भी थे, ठीक है, एक समय था जब बहुत से नास्तिक नहीं थे।

यह दिलचस्प है कि वोल्टेयर, जो एक देववादी थे, नास्तिकों से बहुत नाराज थे क्योंकि उन्हें लगता था कि उन्होंने पूरे ईश्वर-विरोधी आंदोलन को बदनाम किया है। लेकिन 19वीं शताब्दी तक नास्तिकता को अक्सर एक तरह की पागलपन माना जाता था। लेकिन हमारे समय में, नास्तिक खुलकर सामने आ गए हैं और ईसाई धर्म और ईश्वर में विश्वास का खुलेआम मज़ाक उड़ा रहे हैं।

और ऐसे तरीकों से मज़ाक उड़ाते हैं जो न तो बुद्धिमानी भरे हैं और न ही उतने चतुर हैं जितना वे खुद को समझते हैं। आप जानते हैं, जेबस को इतना मज़ाकिया क्यों होना चाहिए, मुझे वास्तव में

नहीं पता, लेकिन ऐसा लगता है कि वे ऐसा सोचते हैं। लिखी गई कुछ पुस्तकों में ईश्वर को सभी साहित्य के इतिहास में सबसे धिनौना चरित्र बताया गया है, इत्यादि।

मेरा मानना है कि ऐसी चीज़ें जो परमेश्वर के चरित्र और उसके कामों को कलंकित करती हैं, साथ ही जो परमेश्वर के नाम का मज़ाक उड़ाती हैं, वे इस आज्ञा का उल्लंघन हैं। वाकई। अब, हमारे समय में इसका उतना महत्व नहीं है।

हम धर्मतंत्र में नहीं रहते। हमें राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अगर इस तरह की बातें चर्च के भीतर हो रही होतीं, अगर चर्च के भीतर लोग भगवान का मज़ाक उड़ा रहे होते और भगवान के नाम का मज़ाक उड़ा रहे होते, तो मुझे लगता है कि यह पूरी तरह से अलग मामला होता।

चूँकि ये चर्च के बाहर के लोग हैं, मुझे यकीन नहीं है, मेरा मतलब है, वे वैसे भी आज्ञाओं से बंधे नहीं हैं। ऐसा नहीं है कि हममें से कोई भी वास्तव में आज्ञाओं से बंधा हुआ है, लेकिन वे दस आज्ञाओं के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं। इसलिए हम उन्हें बता सकते हैं, आप जानते हैं, आप व्यर्थ में प्रभु का नाम ले रहे हैं।

आप तीसरी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं। और वे शायद जवाब देंगे, तो क्या हुआ? और एक हद तक, मुझे उनसे सहमत होना होगा क्योंकि, आप जानते हैं, वे उस वाचा समुदाय का हिस्सा नहीं हैं। इसलिए उन्हें वह करने दें जो वे करना चाहते हैं, और वे परिणामों के साथ जी सकते हैं।

लेकिन हाँ, मेरा मतलब है, यह स्पष्ट रूप से, कई मायनों में, ईश्वर में विश्वास को कमज़ोर करता है। और यह उन लोगों के विश्वास को कमज़ोर करता है जो संघर्ष कर रहे हैं, जो कमज़ोर हो सकते हैं। और यह दुखदायी है, लेकिन यह प्रभावी है।

और मुझे आश्चर्य है, आप जानते हैं, क्या यह किसी तरह से शैतान का कोई नया सुनियोजित उपकरण नहीं है। और ठीक है, आप जानते हैं, भगवान का सम्मान करने और तार्किक रूप से बहस करने की कोशिश करना, काम नहीं आया, तो चलिए अपमान करते हैं। झूठी शपथ।

मैं भगवान की कसम खाता हूँ कि मैं आपके करों को कम करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से काम करूँगा। हाँ, लोग ईमानदार दिखने के लिए भगवान का नाम ले सकते हैं, और फिर भी उन लोगों में वास्तव में कोई धर्मपरायणता नहीं हो सकती है। और बेशक, सबसे आम तौर पर, हम इसे राजनेताओं से जोड़ते हैं, लेकिन निश्चित रूप से बहुत से अन्य लोग भी हैं जो इसी तरह की बात करेंगे।

जो लोग ईमानदार दिखना चाहते हैं, जो आपको यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वे जो कह रहे हैं, उसे पूरा करेंगे, वे हमारे समय और युग में अक्सर भगवान का नाम लेते हैं। यह सिर्फ़ राजनेताओं के साथ ही नहीं होता। कुछ समय पहले मैंने एक युवा जोड़े को सलाह दी थी, जिनका रिश्ता बहुत ही मुश्किलों भरा था।

और इन दोनों को चर्च में ज़्यादा अनुभव नहीं था, लेकिन वे मेरे चर्च में आए, मेरे चर्च में आने लगे, और फिर विवाह परामर्श के लिए मेरे दफ़्तर में आने लगे। और यह हमेशा इनमें से एक था, उसने कहा, उसने इस तरह की बातें कहीं। जब भी उनका झगड़ा होता, जब भी वे, और कभी-कभी यह वास्तव में शारीरिक झगड़े होते।

जब भी ये चीजें होतीं, तो वह मुझे अपनी कहानी सुनाता और कहता, मैं भगवान की कसम खाता हूँ, ऐसा ही हुआ था। और फिर वह अपना विवरण देती और कहती, मैं भगवान की कसम खाता हूँ, ऐसा ही हुआ था। और वे आगे-पीछे होते, उनमें से हर एक मुझे एक-दूसरे से बहुत अलग कहानी सुनाता, हर कोई भगवान की कसम खाता कि वे जो कह रहे थे वह सच था।

उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्योंकि, ज़ाहिर है, वे ईमानदार दिखना चाहते थे। वे मुझे यकीन दिलाना चाहते थे कि वे ही सच बोल रहे थे। और शायद उनमें से कोई भी सच नहीं बोल रहा था, लेकिन वे ऐसा दिखाना चाहते थे जैसे कि वे सच बोल रहे थे।

और इसलिए उन्होंने मुझे परिस्थितियों में अपनी ईमानदारी का यकीन दिलाने के लिए भगवान के नाम का इस्तेमाल खाली तरीके से किया। हाँ, लोग आज भी इस तरह की हरकतें करते हैं। लोग भगवान के नाम का इस्तेमाल अपने निजी फायदे के लिए करते हैं, जैसे कि वे कभी-कभी जादू कर रहे हों।

शायद हम जादू के बारे में इतना सोचते या चिंता नहीं करते। यह शायद अभी भी होता है, लेकिन आजकल यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन कहीं ज़्यादा बड़े पैमाने पर और कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण वे लोग हैं जो अपने निजी फायदे के लिए अलग-अलग तरीकों से भगवान के नाम का इस्तेमाल करते हैं।

और इनमें से कुछ बातें जिनके बारे में हम सोच सकते हैं, उदाहरण के लिए, आप जानते हैं, धर्मयुद्ध, जहाँ लालची प्रभु और लालची पादरी कभी-कभी लोगों को अपने दुश्मनों के खिलाफ लड़ने के लिए उकसाने के लिए भगवान और भगवान के सम्मान का नाम लेते थे। और वे अपने लालच को धर्मनिष्ठता में लपेटते हैं। वे भगवान के नाम का उपयोग करके अनजान लोगों को अपनी दुष्टता में शामिल करते हैं।

और मुझे लगता है कि मैं यहाँ व्यर्थ ही कुछ जोड़ सकता हूँ। कितने राजनेताओं ने लोगों की धार्मिक संवेदनाओं को आकर्षित करके अपना करियर बनाया है? कितने लोगों ने भगवान के नाम का उपयोग करके अपने मंत्रालयों का निर्माण करने की कोशिश की है जो वास्तव में भगवान के प्रति सच्चे सम्मान को नहीं दर्शाते हैं? आप जानते हैं, यह कल्पना करना कठिन है कि निराशावाद की गहराई किसी को यह सोचने पर मजबूर कर सकती है कि मंत्री बनना ही वह तरीका है जिससे वे खुद को अमीर बना सकते हैं। लेकिन वे उन मामलों में भगवान के नाम का व्यर्थ उपयोग कर रहे हैं।

एक और बात यह भी है कि क्या आप कभी चर्च बोर्ड की बैठकों में गए हैं जहाँ लोगों को यकीन है कि वे जो चाहते हैं, जिस कारण से वे विश्वास करते हैं, वह भगवान का कारण होना चाहिए, और वे भगवान का नाम पुकारेंगे और फिर से, जो कुछ भी उन्हें लगता है कि महत्वपूर्ण है, उसके साथ

भगवान का नाम जोड़ देंगे। मैं ऐसी बैठकों में गया हूँ जहाँ भगवान चाहते हैं कि हम गाजर का बहिष्कार करें, आप जानते हैं। शायद वह ऐसा चाहते हैं, मुझे इस पर संदेह है।

लेकिन मुद्दा यह है कि ऐसे बहुत से मामले हैं जहाँ लोग स्वार्थी तरीके से परमेश्वर के नाम को अपने उद्देश्यों से जोड़ देते हैं। कई साल पहले, मैं एक चर्च का सदस्य था जो कॉलेज परिसर के बिल्कुल पास स्थित था। ऐसा लगता था कि चर्च के लिए कॉलेज परिसर में लोगों तक पहुँचने और महान मंत्रालय करने के लिए यह एक बेहतरीन जगह थी।

लेकिन चर्च में शामिल बहुत से लोगों को नहीं लगता था कि उनके पास कॉलेज के छात्रों की सेवा करने का हुनर या दिलचस्पी है। इसलिए चर्च में एक बहुत मजबूत गुट था जो इमारत को बेचना चाहता था और शहर के बाहर एक नई इमारत खरीदना चाहता था। उन्हें यकीन था कि वे इमारत के लिए बहुत अच्छी कीमत पा सकते हैं क्योंकि यह एक बेहतरीन संपत्ति थी।

लेकिन वहाँ एक विरोधी गुट था। और विरोधी गुट वास्तव में अधिक धार्मिक समूह था। वे कह रहे थे, भगवान ने हमें यह इमारत दी है, और भगवान नहीं चाहते कि हम इसे हटाएँ।

और इसलिए उनकी प्राथमिकताएँ ईश्वर की इच्छा बन गईं। मुझे लगता है कि यह ईश्वर के नाम को व्यर्थ में लेने के बहुत करीब है। वास्तव में यह विनम्रता का सवाल है, यह पहचानना कि ईश्वर कौन है, यह पहचानना कि हम कौन हैं, और यह पहचानना कि हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ईश्वर का उपयोग नहीं करते हैं।

बल्कि, हमें ईश्वर को अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए हमें इस्तेमाल करने देना चाहिए। हमें यह पहचानने की ज़रूरत है कि ईश्वर खतरनाक भी हो सकता है, आप जानते हैं, क्रॉनिकल्स ऑफ़ नार्निया की वह पंक्ति बहुत पसंद है जहाँ मिस्टर बीवर बच्चों को समझाते हैं कि असलान एक पालतू शेर नहीं है। नहीं, वह हमारी सेवा नहीं करता।

हम उसकी सेवा करते हैं। और इसलिए, हमें इस तथ्य को पहचानना होगा कि हमारे उद्देश्यों के लिए परमेश्वर को शामिल करना आवश्यक है। अनिवार्य रूप से, मेरा मानना है कि शायद आज हमारी दुनिया और चर्च में इस तीसरी आज्ञा को तोड़ने का सबसे प्रमुख तरीका यही है।

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो द्वारा दस आज्ञाओं पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 4 है, आज्ञा 3: नाम में क्या रखा है?